B.A. History Hon's, Part-II

Paper: IV, Unit: III (C), Date: 21. 8. 2020 Lecture No: 26

Lession: इंडोनेशिया (हिन्देशिया) में राष्ट्रवाद

20वीं शदी के प्रारंभ में हिन्देशिया में राष्ट्रवाद का जन्म कई कारणों का संयोग था इसके मूल में डच-शासन से मुक्ति प्राप्त करना था। 1901 में डा. अब्राहम कायपर हॉलैंड का प्रधानमंत्री बना। 1880 में उसका एक पैम्फलेट प्रकाशित हुआ था। उसने डच सरकार से हिन्देशिया के प्रति नैतिकता नीति का पालन करने का अनुरोध किया था। इस समय डच संसद में अनेक समाजवादियों का प्रवेश हो चुका था जिन्होंने 'हिन्देशिया हिन्देशियाइयों' के लिए का नारा दिया। वे उसे स्वराज्य देना चाहते थे। डेवन्टर नामक एक उदारवादी ने 1899 में एक लेख में बतलाया कि 1867 से जितना भी धन हिन्देशिया से प्राप्त किया गया है, उसे वापस देना चाहिए। 1903 में विकेन्द्रीकरण कानून और 1904-5 में आदेश पारित कर स्थानीय परिषदों की स्थापना की गई। इनके हिन्देशियाई थे। 1905 में सार्वजनिक सेवा के उपनिवेशक द ग्राफ ने यूरोपीयों की जगह हिन्देशियाई को नियुक्त करने का प्रश्न उठाया। किन्तु कोई सुनवाई नहीं हुई। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में जावा में राष्ट्रीय जागरण के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे। चीन के बॉक्सर विद्रोह, स्पेनियों के विरुद्ध फिलिपीनों की क्रांति, 1904-5 के रूस जापान युद्ध में जापानियों की विजय आदि बाह्य घटनाओं ने हिन्देशियाइयों को काफी प्रभावित किया।

1908 में वदासा ने पहली राष्ट्रीय संस्था बुदी उतोमो की स्थापना की। इसके सदस्य जावा के बुद्धिजीवियों और पदाधिकारी थे। यह संस्था राष्ट्रीय पैमाने पर स्कूलों की स्थापना चाहती थी। 1911 में शारिकत इस्लाम की स्थापना की गई। इसके मुख्य चार उद्देश्य थे—(a) हिन्देशिया के व्यापारिक हितों का प्रोत्साहन (b) पारस्परिक आर्थिक सहयोग, (c) हिन्देशियाइयों का बौद्धिक और भौतिक कल्याण (d) इस्लाम धर्म का प्रचार। 1916 में राष्ट्रीय स्तर पर इसका सम्मेलन बुलाया गया जिसमें 80 स्थानीय समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में स्वायत्त शासन के लिए एक प्रस्ताव पारित किया गया। इसी समय हिन्देशिया में समाजवाद का उदय हुआ। 1917 के रूसी-क्रांति ने जावा को काफी प्रभावित किया। अक्टूबर 1917 में बटाविया की राष्ट्रीय सम्मेलन में जीवरो अमीतौनों ने सरकार की आलोचना की। पापी ईश्वरवाद के विरुद्ध जेहाद घोषित कर दिया गया। मास्को में तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया। जुलाई 1919 में फ्रोंग में सत्याग्रह-आन्दोलन किया गया। इसी बीच मध्य सेलेबिस में एक दुःखद घटना घटी जिसमें कुछ डच अधिकारी मारे गए। अब पी.के.आई. और शारिकत इस्लाम के बीच संघर्ष रह गया। संघर्ष का मूल कारण आर्थिक प्रश्न था। मास्को आया और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद को वृहत् इस्लामवाद स्वीकार करने को कहा। अक्टूबर 1921 में सुरबया में शारिकत इस्लाम का छठा राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। उन्होंने एक प्रस्ताव पारित कर शारिकत इस्लाम के सदस्य को किसी दूसरे दल में शामिल होने से मना कर दिया। इनके विरुद्ध संघर्ष हुआ और 1922 में शारिकत इस्लाम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से संपर्क स्थापित किया और असहयोग नीति का अवलंबन किया। 1923-26 में अनेक विद्रोह हुए। बहुत कम समय के लिए हिन्देशियाई आन्दोलन में साम्यवादियों का प्रभाव बढ़ गया। लगभग 13000 साम्यवादियों को न्यूगिनी में नजरबंद रखा गया। साम्यवादी क्रांतिकारी आन्दोलन की असफलता ने शारिकत इस्लाम का मार्ग प्रशस्त कर दिया। हिन्देशियाई राष्ट्रवाद का मुख्य अंग बन गया। उनके प्रभाव तथा ... अध्ययन दल के नेता जीम्रो मांगुन कुसुमा के नेतृत्व में 1927 में सुकार्नो ने एक नए राजनीतिक दल 'परसेरिकतन नेशनल इन्डोनेशिया' की स्थापना की। सभी राष्ट्रवादी ... को असहयोग-आन्दोलन छोड़ने के लिए आह्वान किया। 1936 में हिन्देशियाई संसद ने एक प्रस्ताव पारित कर नीदरलैंड से स्वायत्त शासन की माँग की। किन्तु इसका उत्तर नहीं मिला। द्वितीय विश्वयुद्ध और हिन्देशियाई राष्ट्रीय आन्दोलन 1939 में

द्वितीय विश्वयुद्ध शुरु हो गया। शीघ्र ही हिन्देशिया को जापानी साम्राज्यवाद का शिकार होना पड़ा। जापान के विदेश मंत्री अरीता ने हिन्देशिया के संबंध में अपनी नीति का प्रतिपादन करते हुए कहा "दक्षिण समुद्र के क्षेत्र के साथ और विशेषतः नीदरलैंड के ईस्ट इंडीज के साथ जापान का बहुत अधिक घनिष्ठ आर्थिक संबंध है। हालैंड पर जर्मनी का अधिकार होते ही हिन्देशिया का राष्ट्रीय आन्दोलन पुनः सक्रिय हो उठा। लेकिन इसी बीच पूर्व एशिया में युद्ध की स्थिति में परिवर्तन आया और सारी योजना बेकार हो गई। जापानी विजय के फलस्वरूप हिन्देशिया डच आधिपत्य से मुक्त होकर जापानी अधिकार में चला गया। जापान ने सैनिक शासन शुरु किया और उसका आर्थिक शोषण शुरु कर दिया। 17 अगस्त, 1945 को डा० सुकार्नो के नेतृत्व में हिन्देशिया में एक स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकार की स्थापना कर दी गई। डा० मुहम्मद हट्टा को उपराष्ट्रपति बनाया गया। जापान की अनुमति से संगठित स्थानीय स्वयंसेवक सेना नए गणराज्य का सैनिक केन्द्र बन गई। जावा का बटाविया नगर जकार्ता के नाम से राजधानी बना दिया गया। जापान की पराजय के बाद हिन्देशिया पर अधिकार करने का काम ब्रिटेन सेना को सौंपा गया। लिंगायती समझौता के पूर्व डच सरकार ने हिन्देशियाई नेताओं के साथ समझौता के लिए वार्तालाप शुरु कर दी। 14 नवम्बर, 1946 को सुल्तान शहरीर हिन्देशियाई गणराज्य का प्रधानमंत्री बना। 25 मार्च, 1947 को लिंगायती समझौता हुआ। इसमें जावा, सुमात्रा और मदुरा में स्थापित स्वतंत्र हिन्देशियाई गणराज्य को मान्यता मिल गई। लिंगायती समझौता एक संकटकालीन व्यवस्था सिद्ध हुई। लिंगायती समझौता से न तो डच सरकार और न हिन्देशियाई गणराज्य खुश था। लिंगायती समझौता को लागू करने के लिए कोई आवश्यक कदम उठाए नहीं गए। डच ने जुलाई, 1947 में हिन्देशियाई गणराज्य पर आक्रमण कर दिया। इस समय भारत और आस्ट्रेलिया ने हिन्देशिया की समस्या को संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में पेश किया। संयुक्त राष्ट्र और हिन्देशिया ... इस समस्या पर विचार किया और 31 जुलाई, 1947 को युद्ध विराम प्रस्ताव पारित कर दिया। लेकिन युद्ध जारी रहा। बेल्जियम, आस्ट्रेलिया और संयुक्त राज्य अमेरिका की सद्भाव मंडल समिति ने नीदरलैंड और हिन्देशियाई गणराज्य को 17 जनवरी, 1948 तक रेनविल समझौता मानने के लिए राजी कर लिया। ... दोनों को रेनविल समझौता को लागू करने में असफल रही। 1948 तक बातचीत होती रही, लेकिन कोई समझौता नहीं हुआ और अविश्वास और संदेह का वातावरण बना रहा। इसी बीच हिन्देशिया में साम्यवादियों ने सशस्त्र विद्रोह का प्रयास किया। शीघ्र ही इस विद्रोह को दबा दिया गया और अनेक साम्यवादी नेताओं को कैद कर लिया गया। 18 दिसम्बर, 1948 को डच सरकार ने "पुलिस कार्रवाई" द्वारा गणतंत्रीय प्रदेश को रौंद डाला। गणतंत्रीय सरकार के और सम्पूर्ण हिन्देशियाई गणतंत्र के प्रमुख नेता गिरफ्तार कर लिए गए। दीर्घकालीन वार्ता और अन्तर्राष्ट्रीय दबाव पड़ने पर 3 अगस्त 1949 को हालैंड और हिन्देशिया ने युद्ध-विराम प्रस्ताव को मान लिया। दोनों में यह समझौता हो गया कि वे हालैंड में एक गोलमेज सम्मेलन बुलाकर पारस्परिक समस्याओं का निपटारा करेंगे।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
जे० बी० कालेज, जयनगर